भाषा और हिंदी आलोचना : अंतर्संबंध

BHASHA AUR HINDI AALOCHANA: ANTARSAMBANDH

Thesis submitted for the partial fulfilment of the requirements for the degree Doctor of Philosophy in Arts

By

प्रियंका कुमारी सिंह

Priyanka Kumari Singh

Department of Hindi
Faculty of Humanities and Social Sciences
Presidency University
Kolkata, India
2023

भाषा और हिंदी आलोचना : अंतर्संबंध

BHASHA AUR HINDI AALOCHANA: ANTARSAMBANDH

Thesis submitted for the partial fulfilment of the requirements for the degree Doctor of Philosophy in Arts

By

प्रियंका कुमारी सिंह

Priyanka Kumari Singh

Under the Supervision of

डॉ. ऋषिभूषण चौबे

Dr. Rishi Bhushan Choubay

Department of Hindi

Faculty of Humanities and Social Sciences

Presidency University

Kolkata, India

2023

भाषा और हिंदी आलोचना : अंतर्संबंध

BHASHA AUR HINDI AALOCHANA: ANTARSAMBANDH

Name of the Candidate: Priyanka Kumari Singh

Registration Number: R-18RS1210116

Date of Registration: 25th March, 2019

Department- Hindi

Priyanka Kumari Singh

प्रियंका कुमारी सिंह

Priyanka Kumari Singh

घोषणा

मैं, प्रियंका कुमारी सिंह, यह घोषणा करती हूँ कि पी-एच.डी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध "**भाषा और हिंदी आलोचना: अंतर्संबंध**" मौलिक है तथा परिश्रमपूर्वक अध्ययन, मनन और शोध के उपरांत तैयार किया गया है। इस शोध-कार्य का निर्देशन डॉ. ऋषिभूषण चौबे, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) ने किया है।

इस शोध-प्रबंध में दी गईं सभी जानकारियाँ अकादमिक नियमों और नैतिक आचरण के अनुरूप प्राप्त और प्रस्तुत की गई हैं।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि लागू नियमों और आचरणों के अनुसार मैंने उन सभी सामग्रियों और परिणामों को सम्यक रूप से उद्धृत और संदर्भित किया है जो इस शोध-प्रबंध में मौलिक नहीं हैं।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि यह शोध-प्रबंध अंशतः या पूर्ण रूप से किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में इससे पहले प्रस्तुत नहीं किया गया है।

Priyanka Kumari Singh

प्रियंका कुमारी सिंह

Priyanka Kumari Singh

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA

Presidency University
Hindoo College (1817-1855), Presidency College (1855-2010)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रियंका कुमारी सिंह ने पीएचडी उपाधि के लिए 'भाषा और हिंदी आलोचना: अंतर्संबंध' शीर्षक शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में पूरा किया है।

यह प्रियंका कुमारी सिंह का मौलिक कार्य है, न तो इसका कोई अंश उनके द्वारा किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत किया गया है और न ही मेरी जानकारी में अब तक किसी अन्य व्यक्ति ने इस पर शोध-कार्य किया है।

मैं इन्हें शोधकार्य, आचरण और चरित्र की दृष्टि से इस उपाधि के योग्य एवं उपयुक्त समझता हूँ।

9/10/2023

डॉ. ऋषि भूषण चौबे
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता
Dr. Rishi Bhushan Choubay
Assistant Professor
Department of Hindi
Presidency University, Kol-73

भूमिका

'भाषा और हिन्दी आलोचना : अंतर्संबंध' शीर्षक शोध-प्रबंध में हिन्दी आलोचना में भाषा-संबंधी चिंतन के सूत्रों की खोज की गई है तथा हिन्दी आलोचना की अपनी भाषिक संरचना का भी अध्ययन किया गया है। हिन्दी आलोचना की विधिवत शुरुआत भारतेंदु युग से मानें तो इसका इतिहास डेढ़ सौ वर्षों से कुछ अधिक का ठहरता है। इस समयावधि में हिन्दी साहित्य वाङ्मय में कई आलोचक हुए हैं और हैं। उन सबका अध्ययन एक शोध-प्रबंध में सम्भव नहीं अतः अध्ययन की सुविधा के लिए शोध-कार्य को हिन्दी के चार प्रमुख आलोचकों रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा तथा नामवर सिंह की आलोचना-कृतियों पर केंद्रित रखा गया है।

आधुनिक हिन्दी आलोचना में भाषा-संबंधी चिंतन की स्थिति क्या है, आलोचकों ने साहित्य के सम्पूर्ण मूल्यांकन में उसके भाषिक पक्ष को कितना महत्व दिया है तथा भाषा-विश्लेषण के क्या उपकरण हिन्दी आलोचना ने अपनाये व विकसित किए हैं, इन प्रश्नों पर यह शोध-कार्य केंद्रित है।

आधुनिक आलोचकों ने आलोचना की भाषा को भी आलोचना का 'औजार' माना है। रचनाकार की अंतःवृत्तियों की गहरी छानबीन तथा उसके उद्घाटन के लिए, रचना की सार्थकता की खोज के लिए, रचना को परिभाषित कर ज्ञान के अन्य क्षेत्रों द्वारा प्राप्त निष्कर्षों से उसे जोड़कर मानव समाज-सभ्यता-संस्कृति की गति के विषय में समग्र समझ बनाने के लिए आलोचना की अपनी भाषा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। **चयनित आलोचकों की आलोचना-भाषा के**

अध्ययन-विश्लेषण द्वारा हिन्दी आलोचना की भाषा की विशिष्टताओं को समझने का प्रयास भी इस शोध-प्रबंध में किया गया है।

यह शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत भाषा की अवधारणा पर विस्तार से विचार करने के साथ-साथ भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र में भाषा-संबंधी चिंतन की परम्परा का संक्षिप्त अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत तीन उपअध्यायों में साहित्यिक विधा के रूप में आलोचना की भारतीय तथा पाश्चात्य अवधारणा, आलोचना और सिद्धांत (थ्योरी) के अंतर्संबंध, रचना और आलोचना के अंतर्संबंध का अध्ययन किया गया है। जैसे हर युग 'कविता क्या है' सवाल करता है, वैसे ही बीसवीं सदी के अलग-अलग दशकों में 'आलोचना क्या है' का जवाब भी युगानुसार खोजने के प्रयास हुए हैं। इस शोध-प्रबंध के इस अध्याय में इन्हीं परिवर्तनशील मान्यताओं के विश्लेषण के द्वारा आलोचना की अवधारणा को समग्रता में समझने का प्रयास किया गया है। आलोचना की अवधारणा में सवाल केवल आलोचना क्या है का नहीं है, बल्कि आलोचना का दायित्व, उसके तरीके, उसकी कसौटियों, रचना से आलोचना के संबंध आदि सवाल भी निहित होते हैं। इस अध्याय में आधुनिक हिन्दी साहित्य में आलोचना की अवधारणा पर विचार किया गया है, प्रसंगवश पाश्चात्य आलोचना की उन अवधारणाओं पर भी संक्षिप्त विचार किया गया है जिनसे हिन्दी आलोचना दूर तक प्रभावित हुई है।

तृतीय अध्याय में चार उपअध्यायों के अंतर्गत चारों चयनित आलोचकों के भाषा-संबंधी विचारों के विश्लेषण के द्वारा उनकी भाषा-दृष्टि को समझने का प्रयास किया गया है। विश्लेषण के लिए जो बिंदु तय किए गए हैं वे इस प्रकार हैं- भाषा की अवधारणा पर विचार, भाषा और भाव/विचार का संबंध, भाषा और सम्प्रेषणीयता, भाषा और कविता, भाषा और गद्य विधाएँ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता की आलोचना के संदर्भ में आलोचना की अपनी दृष्टि और कसौटियाँ विकसित कीं। काव्यभाषा की सैद्धांतिकी गढ़ते हुए तथा कवियों की व्यावहारिक आलोचना करते हुए उन्होंने भाषा की प्रकृति, शब्द के प्रकारों व प्रकार्यों पर मौलिक चिंतन किया है। ऐसा करते हुए उन्होंने भारतीय दर्शन-व्याकरण-काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं से पारिभाषिक शब्द लेते हुए भी उन्हें युगानुरूप नवीनता प्रदान की है, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हुई तत्कालीन खोजों के साथ तारतम्यता बिठाते हुए उन अवधारणाओं को प्रासंगिक बनाया है। कथा-साहित्य में लचीली, व्यावहारिक तथा पात्रों के देशकाल अनुरूप भाषा के प्रयोग पर इन्होंने बल दिया है। आचार्य शुक्ल स्वयं एक सफल निबंधकार तथा आलोचक हैं, अतः उन्होंने निबंध व आलोचना की भाषा पर गद्य की अन्य विधाओं की तुलना में अधिक विचार किया है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का साहित्य-चिंतन समग्र भारतीय चिंतन परम्परा के बीच हिन्दी साहित्य के विकास को उसके बीच और उसकी संगति में देखने की दृष्टि देता है। 'कालीदास की रचना-प्रक्रिया' पुस्तक में वे कालीदास के हवाले से स्वयं को 'तत्त्वान्वेषी' के बजाय 'कृती' कहते हैं जहाँ तत्त्वान्वेषी का अर्थ आधुनिक शब्दावली में आलोचक है और कृती का अर्थ है सहृदय पाठक। यही कारण है कि तत्त्वान्वेषी की तरह रचना में इतिहास, भूगोल, अलंकार, छंद और पद-लालित्य खोजने से अधिक कृती की तरह सीधे रस तक पहुँचने, उसमें डूब जाने और छककर सौंदर्य का पान करने में वे अधिक रमते हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के भाषा-चिंतन के केंद्र में मनुष्य की चेतना और उसकी सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास से भाषा के द्वंद्वात्मक संबंध का विवेचन है। मनुष्य की प्रथम रूप-सृष्टि को भयमूलक नहीं बल्कि आनन्दमूलक मानते हुए संगीतमयी काव्यभाषा को मानव-चेतना की आदिम उल्लास-भावना का प्रतिफलन मानते हैं। गद्य को वे 'प्रयोजन की भाषा' कहते हैं और विकसित मनुष्य की तर्क-चेतना की स्वाभाविक परिणति मानते हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा ने भाषा मात्र और हिन्दी भाषा के सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक पक्षों पर बहुत विचार किया है। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो हिन्दी आलोचकों में भाषा के सभी पक्षों के प्रति सर्वाधिक रुचि और विचार-विमर्श रामविलास शर्मा के यहाँ है। वे मानते हैं कि भाषा-संबंधी किसी भी समस्या का विवेचन मानव-समाज के उद्भव और विकास के प्रसंग में ही संभव है। अतः भाषा संबंधी उनके चिंतन के आयाम भाषा वैज्ञानिक पहलुओं से लेकर विश्वस्तर की राजनीति से जुड़ते हैं। आधुनिक साहित्यिक आलोचना में रचना की भाषा पर या शिल्प पर केंद्रित समीक्षा मुख्यतः उन समीक्षकों द्वारा हुई जो कुछ हद तक या पूर्णतः रूपवादी थे। दूसरी तरफ एक ऐसी समाजशास्त्रीय समीक्षा भी हिन्दी में पनप रही थी जो साहित्य को कलापक्ष और समाज पक्ष के दो विपरीत ध्रुवों के रूप में देखता और दिखाता था। इन दोनों ही आलोचना-पद्धतियों के विरोध में डॉ. रामविलास शर्मा की साहित्यिक आलोचना विकसित होती है। रचना के भाषिक पक्ष को कला पक्ष के अंतर्गत और विषय-वस्तु को सामाजिक पक्ष के अंतर्गत बाँट कर विचार करने की पद्धति को वे उचित नहीं मानते और न ही दोनों पक्षों को पूर्णतः एक ही चीज मानते हैं। साहित्य में कला के प्रति असावधानी के निदर्शन को रामविलास शर्मा सही नहीं मानते, इसके प्रमाण उनकी व्यावहारिक आलोचना में सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं।

आलोचक नामवर सिंह के चिंतन व लेखन में प्रारम्भ से ही भाषा का मुद्दा महत्वपूर्ण रहा है । छायावादी कविता के अलंकृत और स्फीत भाषिक प्रयोग तथा प्रगतिवादी कविता की बेपरवाह या कलाहीन भाषा पर आक्षेप और उनके बरअक्स एक बौद्धिक और कलात्मक काव्यभाषा की खोज के दावों और प्रयासों के माहौल में नामवर जी ने काव्यभाषा को युगीन आवश्यकताओं और भावों के आवेश से चालित बताया है न कि किसी बने-बनाए, शाश्वत सिद्धांत से चालित। भाषा और शिल्प की बारीकियों को अपनी आलोचना में महत्वपूर्ण स्थान देते हुए भी नामवर सिंह रूपवादी रुझानों से सावधान रहे और पाठक को सावधान करते रहे । साथ

ही आलोचना करने के क्रम में भाषा और अनुभव, भाषा और चिंतन, भाषा और ज्ञान की संरचना के बीच के संबंध को परिभाषित करने वाले नये अध्ययनों को उन्होंने ध्यान में रखा है। वे इस मत के समर्थन में हैं कि भाषा की समृद्धि अनुभव की शक्ति से जुड़ी है और अनुभव तभी पुष्ट हो सकते हैं जब व्यक्ति की भाषा समृद्ध हो। पर भाषा और अनुभव के इस संबंध को केवल सतही स्तर पर या यांत्रिक तरीके से समझा जाए तो विश्लेषण-मूल्यांकन की प्रक्रिया गलत दिशा में भी जा सकती है। हवाई बातों को, केवल शब्दों के खेल को अनुभव की गहराई समझने का भ्रम भी हो सकता है। इसलिए नामवर जी आलोचक से बहुत अधिक सावधानी और सृजनशीलता की माँग करते हैं।

चारों आलोचकों के आलोचना-कर्म में भाषा-दृष्टि प्रखर है। हिन्दी आलोचना में भाषा-संबंधी सामाजिक-राजनीतिक-दार्शनिक-सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष को इनकी आलोचना ने अपने-अपने तरीके से समृद्ध किया है। परम्परा से प्राप्त भारतीय भाषा-दृष्टि को समयानुकूल बनाने के साथ इन्होंने आधुनिक भाषा-चिंतन से भी संवाद किया है। इन आलोचकों के भाषा-संबंधी विचारों के अध्ययन से एक निष्कर्ष यह भी निकलता है कि बिना स्पष्ट भाषा-दृष्टि के आलोचना कर्म के साथ न्याय नहीं हो सकता।

चतुर्थ अध्याय में आलोच्य आलोचकों की आलोचना-भाषा की विशिष्टताओं का विश्लेषण किया गया है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल की गम्भीर, प्रौढ़ और विचारक्षम आलोचना भाषा को परवर्ती श्रेष्ठ आलोचकों ने हिन्दी में आलोचना के उपयुक्त पहला उत्तम ढाँचा माना है। आलोचक शुक्ल जी की भाषा में तत्सम शब्दों की अधिकता है, इसे कई आलोचकों ने रेखांकित किया है लेकिन यह तत्समप्रवणता शुक्ल जी की भाषा को जटिल, अटपटी या बोझिल नहीं बनाती है । इसका कारण यह है कि वे अप्रचलित शब्दों का प्रयोग भरसक नहीं करते, उनकी आलोचना का उद्देश्य पांडित्य-प्रदर्शन नहीं होने से वाक्य-प्रयोग में स्पष्टता दिखती है और पाठक

से संवाद की प्रवृत्ति के उद्देश्य से चालित उनके लहजे में रोचकता है। वे यथास्थान व्यंग्य करने, प्रसंगवश अपने व्यक्तिगत अनुभवों को आलोचना में शामिल करने से हिचकते नहीं हैं, इस कारण उनकी भाषा में उनके अपने विशिष्ट व्यक्तित्व की छाप भी है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी चूँकि स्वयं को तत्त्वान्वेषी के बजाय कृती मानते हैं, यह मान्यता उनकी आलोचना-भाषा में प्रतिबिम्बित होती है। उनकी आलोचना-भाषा में या तो शोधपरक तटस्थता मिलती है या फिर आस्वादपरक उच्छलता। रचना में डूबकर रचनाकार की खूबियों के बखान में इनकी शब्दावली प्रभावाभिव्यंजक समीक्षा की भाषा की सीमा छूने लगती है। इनकी शैली खंडन-मंडन की न होने से दो-टूक निर्णय देने वाली वाक्य-रचना का प्रायः अभाव मिलता है। रामविलास शर्मा की आलोचना भाषा को सामान्य भाषा में आलोचना का सफल प्रयास कहा गया है। आलोचना में यथासम्भव वे भाषा की अभिधा-शक्ति से काम लेते हैं अर्थात उनकी भाषा कहीं भी अपारदर्शी या गझिन नहीं होती। रचना के कलापक्ष की समीक्षा में आलोचना की भाषा सबसे अधिक जटिल होती है पर रामविलास शर्मा की भाषा भी वहाँ भी जटिल नहीं विचारों की गहनता को, बिना शैथिल्य के सरल वाक्य रचना में साध लेने का दुष्कर कार्य उन्होंने सफलतापूर्वक किया है। आलोचना-भाषा की सर्जनात्मकता का उत्कृष्ट नमूना डॉ. नामवर सिंह की भाषा है। उसमें काव्यात्मकता का रस है। उसकी विशेषता यह है कि वह जिस रचना या रचना-प्रवृत्ति की समीक्षा करती है, उसकी आत्मा में प्रवेश करती है। इस प्रक्रिया में नामवर सिंह की आलोचना-भाषा रचना से प्राणवत्ता (मुहावरे, बीज-शब्द, तेवर) ग्रहण कर उसकी आलोचना को भी अधिक जीवंत बनाती है। इस प्रक्रिया में उनकी भाषा प्रभावाभिव्यंजक समीक्षा की भाषा की तरह 'बेठीक ठिकाने' की नहीं होती क्योंकि उनके दृष्टिकोण की दृढ़ता बरकरार रहती है।

आलोचना की भाषा को विचार की राह में बाधक नहीं होनी चाहिए, इसमें एक व्यवस्था होनी चाहिए, साहित्य-सिद्धांत या आलोचना की अपनी पारिभाषिक शब्दावली का एक सुनिश्चित

अर्थ होना होना चाहिए, आलोचना की भाषा में वागाडम्बर नहीं होना चाहिए तो सरलीकरण की सपाटता भी नहीं होनी चाहिए, आलोचना की भाषा को कविता की भाषा नहीं होना चाहिए, आलोचना की भाषा को जानदार और असरदार होना चाहिए जिसके लिए इसमें थोड़ा व्यंग्य और विनोद का पुट भी होना चाहिए। इस अध्याय के लेखन में इन कसौटियों को ध्यान में रखा गया है।

पंचम अध्याय में इस शोध-कार्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर भाषा और आलोचना के अंतर्संबंध, आलोचना की भाषा के संबंध में विभिन्न आलोचकों के विचारों में मतैक्य और मतभिन्नता का अध्ययन किया गया है और एक आदर्श आलोचना-भाषा के क्या गुण होने चाहिए, इस पर विचार किया गया है।

आभार

इस शोध-प्रबंध को लिखने में मेरे गुरुजनों, परिजनों तथा मित्रों से अनवरत मार्गदर्शन तथा प्रेरणास्पद साथ प्राप्त होता रहा है। विषय के चयन से लेकर इसके विस्तृत तथा जटिल अध्ययन क्षेत्र को समझने के लिए आवश्यक सामग्री के चयन में मेरे शोध-निर्देशक डॉ. ऋषिभूषण चौबे सर ने हर प्रक्रिया में मेरी सहायता की है। इस शोध-कार्य के लिए मिली समयावधि का अधिकांश कोविड महामारी की भयावहता और लॉकडाउन की परेशानियों के बीच का दौर रहा है। डॉ. चौबे ने उस दौर में भी अपने पथप्रदर्शन से मेरा मनोबल बनाए रखा। साहित्य और भाषा के क्षेत्र में इनकी रुचि तथा अध्ययन से मुझे बहुत सीखने-समझने का मौका मिला है। यह शोध-प्रबंध डॉ. ऋषिभूषण चौबे सर के मार्गदर्शन तथा उनसे मिली डाँट और उनके सहयोग के बिना समय से पूरा नहीं हो पाता। मैं हृदय से उनका आभार-प्रकट करती हूँ।

हिंदी विभाग, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापिका प्रो. तनूजा मजूमदार मैडम ने शोध-कार्य के दौरान अपने सुझावों और प्रोत्साहनपूर्ण शब्दों से कार्य में लगने वाले परिश्रम के

प्रति उत्साह को बनाए रखा। मैं इनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। डॉ. वेदरमण पांडेय सर से इस शोध विषय पर प्राप्त हुई महत्वपूर्ण टिप्पणियों तथा अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण पुस्तकों के सुझावों से इस शोध-कार्य को करने में मुझे जो मदद मिली है, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ। विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिद्य गंगोपाध्याय सर ने शोध-कार्य में आने वाली तकनीकी समस्याओं तथा कार्यालयी प्रक्रियाओं को सहज बनाकर इस शोध-कार्य के पूरा होने में बहुत सहायता की है, इसके लिए मैं उनके प्रति आभारी हूँ। विभाग की अन्य प्राध्यापिकाओं डॉ. मेरी हाँसदा तथा डॉ. मुन्नी गुप्ता मैडम से शोध-कार्य के दौरान लगातार स्नेह तथा सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं इनके प्रति भी आभारी हूँ।

विभाग के साथियों पूजा मिश्रा, कार्तिक कुमार राय, नेहा चतुर्वेदी, मधुमिता ओझा, निधि गुप्ता, निधि पांडेय, पूजा प्रसाद तथा बृजेश के साथ हुई ढेर सारी अकादमिक बहसों तथा इनके होने से बने प्रसन्न माहौल ने इस शोध-कार्य के दौरान मेरी बहुत मदद की है। इस शोध-कार्य के पूरा होने में इनकी भी आभा है।

अन्यतम मित्र-कॉमरेड सोमनाथ चक्रवर्ती इस शोध-कार्य के दौरान लगातार साथ बने रहे और मेरा हौसला बढ़ाते रहे। इनके स्नेह, इनसे उपहारस्वरूप मिली महत्वपूर्ण पुस्तकों और इनकी शुभकामनाओं के लिए इनका आभार।

विभाग के बाहर के मित्रों में कवि अखिलेश सिंह के साथ हुई साहित्य-चर्चाओं तथा वाद-विवाद ने साहित्य और आलोचना के प्रति मेरी समझ को विस्तृत किया, इसके लिए मैं इनके प्रति आभारी हूँ।

इस शोध-प्रबंध के लेखन में नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय की सेंट्रल लाइब्रेरी तथा आर्ट्स लाइब्रेरी, भारतीय भाषा परिषद के पुस्तकालय तथा लॉरेटो कॉलेज

के पुस्तकालय से मुझे विशेष सहायता मिली है। मैं इन पुस्तकालयों तथा इनके कर्मचारियों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

शोध-कार्य की लंबी तथा संघर्षमयी समयावधि में मेरा परिवार—बड़े पापा स्वर्गीय ओमप्रकाश मिश्र, मेरी ईया, पिता मिथिलेश कुमार सिंह, माता श्रीमति मंजू देवी, बड़ी बहन रिंकी तथा छोटा भाई प्रभात—मेरी हिम्मत बनकर हमेशा साथ रहे। शब्दों में इनके प्रति आभार प्रकट नहीं किया जा सकता। इस शोध-कार्य और इस कार्य के दौरान मिले अनमोल ज्ञानानुभवों को मैं अपने परिवार को समर्पित करती हूँ।

Priyanka Kumari Singh

प्रियंका कुमारी सिंह